



दिल्ली हाईकोर्ट को मिले सात नए जज ‘कम्युनिज्म की राह पर जा रहे राहुल गांधी’

मुख्य न्यायाधीश देवेंद्र कुमार उपाध्याय ने दिलाई पद की शपथ

वहां काम करने वाले जजों की कुल संख्या 50 हो गई।

एजेंसी नई दिल्ली । दिल्ली हाईकोर्ट को सात नए जज मिले हैं। सोमवार को सात न्यायिक अधिकारियों ने दिल्ली हाई कोर्ट के जज के तौर पर शपथ ली, जिससे वहां काम करने वाले जजों की कुल संख्या 50 हो गई। मुख्य न्यायाधीश देवेंद्र कुमार उपाध्याय ने जस्टिस निवेदिता अनिल शर्मा, जस्टिस निशा सहाय सकसेना, जस्टिस संजय शर्मा,

जस्टिस भरत पाराशर, जस्टिस अदिति चौधरी, जस्टिस दिनेश भट्ट और जस्टिस अरुण भारद्वाज

नए नियुक्त जजों के परिवार के सदस्य शामिल हुए। ये सभी जज पहले राजधानी की जिला



को पद की शपथ दिलाई। शपथ ग्रहण समारोह हाई कोर्ट परिसर में आयोजित किया गया था। इस समारोह में दिल्ली हाई कोर्ट के सभी मौजूदा जजों के अलावा सीनियर न्यायिक अधिकारी, रजिस्ट्री के सदस्य, वकील और

न्यायपालिका में न्यायिक अधिकारी के तौर पर काम कर रहे थे। जस्टिस शर्मा और सकसेना को स्थायी जज के तौर पर नियुक्त किया गया है। वहीं संजय शर्मा, सुप्रीम कोर्ट के सेक्रेटरी जनरल भरत पाराशर, डॉ. अदिति

चौधरी, दिनेश भट्ट और अरुण भारद्वाज को अतिरिक्त जज के तौर पर नियुक्त किया गया है। अरुण भारद्वाज प्रमोशन से पहले दिल्ली हाई कोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल के तौर पर काम कर रहे थे। 19 सितंबर को केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम की सिफारिश के बाद इन सात नई नियुक्तियों की घोषणा की थी। कॉलेजियम ने 10 सितंबर को हुई अपनी बैठक में दिल्ली हाई कोर्ट में प्रमोशन के लिए आठ न्यायिक अधिकारियों के नामों की सिफारिश की थी। इसके बाद केंद्र सरकार ने सात न्यायिक अधिकारियों की नियुक्ति की घोषणा की। हाई कोर्ट में जजों की स्वीकृत संख्या 60 है। इन नई नियुक्तियों के साथ जजों की मौजूदा संख्या बढ़कर 50 हो गई है।

● उनकी पार्टी बनी ‘मुस्लिम लीग माओइस्ट कांग्रेस’ : सुधांशु त्रिवेदी

एजेंसी नई दिल्ली । पूर्व उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी के एक बयान को लेकर सियासत गरमा गई है। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता और सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने हामिद अंसारी के हवाले से पंडित नेहरू से जुड़ी एक किताब का जिक्र करते हुए कांग्रेस पर तीखा हमला बोला है। सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि हामिद अंसारी ने खुद उजागर कर दिया है कि कांग्रेस पूरी तरह से ‘मुस्लिम लीग माओइस्ट कांग्रेस’ बन गई है। सुधांशु त्रिवेदी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, ‘पूर्व उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी को 2019 में लिखी गई एक किताब के अनुसार, नेहरू जी ने कहा कि उनके लिए कम्युनिज्म और हिंदू राष्ट्रवाद उतना बड़ा खतरा नहीं है। इसके लिए मैं हामिद अंसारी

को बधाई देना चाहता हूं।’ सुधांशु त्रिवेदी ने विस्तार से बताते हुए कहा, ‘उनके अनुसार, नेहरू जी



का कहना है कि उनके लिए कम्युनिज्म और हिंदू राष्ट्रवाद उतना बड़ा खतरा नहीं है। इस वजह से, मैं हामिद अंसारी को तीन बहुत जरूरी बातें करने के लिए बधाई देना चाहता हूं। पहली बात: उन्होंने पूरी तरह से यह उजागर कर दिया है कि कांग्रेस अब पूरी तरह से

माओवादी मुस्लिम लीग कांग्रेस बन गई है। यानी, हामिद अंसारी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि कांग्रेस अब अपने पूरे ढांचे में पूरी तरह से माओवादी मुस्लिम लीग कांग्रेस बन गई है, चाहे वह किसी ऐसे व्यक्ति से संबंधित हो जिसने उनकी सरकार के तहत संवैधानिक पद संभाला हो या नहीं।’ उन्होंने कहा, ‘दूसरी बात, उन्हें इस बात का जिक्र करने के लिए बधाई मिलनी चाहिए कि नेहरू जी के अनुसार, कम्युनिज्म से भी बड़ा खतरा था, यानी वे कम्युनिज्म को एक खतरा मानते थे और आज की कांग्रेस अति-वामपंथी हो गई है। राहुल गांधी कम्युनिज्म में उतर गए हैं, जिसे हामिद अंसारी के अनुसार नेहरू जी एक खतरा मानते थे। तीसरी बात के लिए, मैं हामिद अंसारी की सराहना

करना चाहता हूं। आप पूछते थे कि नेहरू का जिक्र क्यों लाया जाता है? हमने इसे नहीं उठाया, आपके समर्थकों ने इसे उठाया और किसी ऐसे व्यक्ति ने इसे उठाया जिसने संवैधानिक पद संभाला था। ‘भाजपा प्रवक्ता ने केरल में कांग्रेस और इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग के गठबंधन पर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा, ‘मुस्लिम लीग की स्थापना जिन्ना ने की थी और आप केरल में उनके साथ मिलकर सरकार चला रहे हैं। आजाद भारत के इतिहास में यह एक काला अध्याय है कि मुस्लिम लीग के 5 मंत्री हैं। क्या वे पूरी तरह से सेक्युलर हैं?’ सुधांशु त्रिवेदी ने कहा, ‘अगर कोई कहता है कि इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग जिन्ना वाली मुस्लिम लीग नहीं है, तो वे झूठ बोल रहे हैं।’

● बिहार के भागलपुर में बड़ा हादसा

बाढ़ के पानी में डूबने से छह बच्चों की मौत

एजेंसी भागलपुर । बिहार के भागलपुर जिले में सोमवार को बाढ़ के पानी में डूबने से छह बच्चों की मौत हो गई। हादसा सुल्तानगंज थाना क्षेत्र के नारायणपुर गांव में हुआ। मृतकों में चार लड़के और दो लड़कियां शामिल हैं। घटना के बाद गांव और आसपास के इलाके में हड़कंप मच गया। जानकारी के मुताबिक, सभी बच्चे सड़क के किनारे बने एक गड्ढे में जमा बाढ़ के पानी में स्नान करने के लिए गए थे। बच्चों को गड्ढे की गहराई का अंदाजा नहीं था। स्नान करने के दौरान वे अचानक गहरे पानी में चले गए और डूबने लगे। आसपास मौजूद लोगों को जब घटना की जानकारी मिली, तो

उन्होंने बच्चों को बचाने का प्रयास शुरू किया। बाद में पुलिस को भी सूचना दी गई। हादसे की सूचना मिलते ही सुल्तानगंज थाना



पुलिस मौके पर पहुंची और स्थानीय लोगों की मदद से बच्चों की तलाश शुरू की। पुलिस ने सभी छह बच्चों के शव बरामद कर लिए हैं। शवों को आवश्यक कानूनी प्रक्रिया के लिए भेजा गया है। पुलिस के अनुसार, मृतकों में

पांच बच्चे सुल्तानगंज थाना क्षेत्र के वार्ड नंबर 27 के रहने वाले थे, जबकि एक बच्चा सबौर थाना क्षेत्र का रहने वाला था। घटना की जानकारी मिलने के बाद मृतकों के परिजनों में कोहराम मच गया। गांव में मातम पसरा हुआ है और परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। सुल्तानगंज के थाना प्रभारी धनंजय कुमार ने बताया कि सड़क किनारे बने गड्ढे में बाढ़ का पानी जमा था। बच्चे उसमें स्नान करने गए थे और गहराई का अंदाजा नहीं होने के कारण हादसे का शिकार हो गए। पुलिस ने सभी शव बरामद कर लिए हैं और गहराई का अंदाजा नहीं होने के कारण हादसे का शिकार हो गए। पुलिस ने सभी शव बरामद कर लिए हैं। शवों को आवश्यक कानूनी प्रक्रिया के लिए भेजा गया है। पुलिस के अनुसार, मृतकों में

आवारा मवेशियों के मामले में सुप्रीम कोर्ट पहुंचा एनएचएआई

शेल्टर होम बनाने के निर्देश पर जताई चिंता

एजेंसी नई दिल्ली । भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) ने आवारा कुत्तों और मवेशियों से जुड़े मामले में सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दाखिल की है। इसमें देशभर में आवारा मवेशियों के लिए शेल्टर होम बनाने के निर्देश पर चिंता जताई गई है। एनएचएआई का कहना है कि सुप्रीम कोर्ट ने यह निर्देश दिया है कि वह पूरे देश में आवारा पशुओं के लिए शेल्टर होम बनाए, लेकिन ऐसा करने में लगभग सात हजार करोड़ रुपए का खर्च आएगा। उसने तर्क दिया कि इसके बजाय स्थानीय जिला प्रशासन को शेल्टर होम बनाने चाहिए। याचिका में सुनवाई के लिए जस्टिस विक्रम नाथ, जस्टिस संदीप मेहता और जस्टिस संजय कुमार की एक स्पेशल बेंच बनाने की मांग की गई। एनएचएआई की ओर

से सॉलिसिटर जनरल (एसजी) तुषार मेहता ने मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली बेंच के सामने मामला रखा। एसजी तुषार मेहता ने कहा कि आवारा कुत्तों से जुड़ा एक मामला है। मैं एनएचएआई की ओर से एक याचिका



दाखिल कर रहा हूं। एनएचएआई को देशभर में आवारा मवेशियों के लिए शेल्टर होम बनाने का निर्देश दिया गया है, जिसमें लगभग 7,000 करोड़ रुपए का खर्च आएगा। हमारा कहना है कि यह काम स्थानीय जिला-स्तरीय प्रशासन को करना चाहिए। हम इसे पूरे देश में नहीं कर

सकते। ‘ इसके बाद मुख्य न्यायाधीश ने इस मामले की सुनवाई के लिए स्पेशल बेंच का गठन का निर्देश दिया। गौरतलब है कि नवंबर 2025 में सुप्रीम कोर्ट ने राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों, एनएचएआई और अन्य एजेंसियों को यह निर्देश



दिया था कि वे राज्य के हाईवे और राष्ट्रीय राजमार्गों से आवारा मवेशियों और जानवरों को हटाएं। साथ ही यह सुनिश्चित करें कि उन्हें ऐसे शेल्टर में रखा जाए जहां उनकी ठीक से देखभाल हो सके। सुप्रीम कोर्ट ने देशभर में आवारा कुत्तों की समस्या पर स्वतः संज्ञान लिया था।

नशे के खिलाफ लड़ाई की शुरुआत पंजाब से नहीं, मुंद्रा पोर्ट से होनी चाहिए : अरविंद केजरीवाल

● ‘अगर आपको पंजाब की रत्ती भर भी चिंता है तो गुजरात से आने वाले नशे को रोकिए’

एजेंसी नई दिल्ली । पंजाब में नशे के मुद्दे को लेकर आम आदमी पार्टी (आप) और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के बीच राजनीतिक बयानबाजी तेज हो गई है। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन के पंजाब पर दिए गए बयान पर सोशल मीडिया के जरिए प्रतिक्रिया दी है। अरविंद केजरीवाल ने नशे के खिलाफ भाजपा की ओर से पंजाब में चलाए जा रहे अभियान पर सवाल उठाते हुए कहा कि नशे के खिलाफ लड़ाई की शुरुआत पंजाब से नहीं, बल्कि गुजरात के मुंद्रा पोर्ट से होनी चाहिए। पूर्व

सीएम केजरीवाल ने सोमवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर



नितिन नवीन की पोस्ट को साझा करते हुए लिखा, ‘नशे के खिलाफ लड़ाई की शुरुआत पंजाब से नहीं, मुंद्रा पोर्ट से होनी चाहिए। अगर आपको पंजाब की रत्ती भर भी चिंता है तो गुजरात से आने वाले नशे को रोकिए।’ दरअसल, भाजपा पंजाब में

नशे के खिलाफ ‘नशा मुक्त पंजाब यात्रा’ निकाल रही है। भाजपा की ओर से 18 सितंबर से शुरू की गई इस मुहिम के तहत चार अलग-अलग यात्राएं निकाली जा रही हैं, जो राज्य के सभी 117 विधानसभा क्षेत्रों से गुजरेंगी। इन यात्राओं का कुल प्रस्तावित सफर करीब 4,000 किलोमीटर बताया गया है और अभियान का समापन 30 सितंबर को जालंधर में प्रस्तावित है। इसी अभियान के संदर्भ में भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन ने कहा था कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें संदेश दिया है कि नशे के खिलाफ लड़ाई की शुरुआत पंजाब की धरती से होनी चाहिए, क्योंकि पंजाब के युवा और पंजाब का भविष्य नशे के

खतरे से प्रभावित हो रहे हैं। केजरीवाल ने इसी बात को आधार बनाकर भाजपा पर पलटवार किया है। उन्होंने सवाल उठाया कि यदि भाजपा को पंजाब के नशे की इतनी चिंता है तो गुजरात से आने वाले कथित नशीले पदार्थों की तस्करी को रोकने पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। हाल के दिनों में पंजाब सरकार की ओर से भी भाजपा की ‘नशा मुक्त पंजाब यात्रा’ पर गुजरात के मुंद्रा पोर्ट का मुद्दा उठाया गया है। पंजाब के वित्त मंत्री हरपाल सिंह चीमा ने मुंद्रा पोर्ट से बड़ी मात्रा में ड्रग्स जब्त किए जाने का मुद्दा उठाते हुए भाजपा से इस संबंध में जवाब मांगा था।

शिवराज सिंह चौहान ने रिश्तत मांगने के मामले में कृषि मंत्रालय के अधिकारी को तत्काल प्रभाव से किया निलंबित

नई दिल्ली/भोपाल(एजेंसी) । केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने रिश्तत मांगने के एक मामले में कृषि मंत्रालय के अधिकारी को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। अधिकारी के खिलाफ शिकायत मिलने के बाद शिवराज सिंह चौहान ने यह कार्रवाई की। जानकारी के अनुसार, कृषि और किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कृषि मंत्रालय के विपणन अधिकारी अनुराग को निलंबित किया है। आरोप है कि उन्होंने सीहोर जिले में निरीक्षण के दौरान वेयरहाउस से सॉल्वेडी की राशि जारी करने के एवज में रिश्तत मांगी थी। शिवाय वेयरहाउस से एक लाख रुपए और श्री कृष्णा वेयरहाउस से करीब 60 हजार रुपए की रिश्तत की मांग की गई थी। इस संबंध में वेयरहाउस संचालकों ने केंद्रीय कृषि मंत्री तक अपनी शिकायत पहुंचाई थी। इसके बाद शिवराज सिंह चौहान ने शिकायत को गंभीरता से लेते हुए अधिकारी को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया। वहीं, केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कृषि और ग्रामीण विकास के सचिव सहित शीर्ष अधिकारियों की बैठक बुलाई है। बताया गया कि अनियमितताओं और कार्य में लापरवाही की विभिन्न शिकायतों को लेकर सोमवार शाम को करीब 7 बजे दिल्ली में यह बैठक होगी। सोमवार को दिन में शिवराज सिंह चौहान पंजाब के दौरे पर रहेंगे। वहां से लौटने के बाद वे कृषि और ग्रामीण विकास के सचिव सहित शीर्ष अधिकारियों के साथ बैठक करेंगे, जिसमें महत्वपूर्ण दिशा निर्देश के साथ प्रभावी निर्णय लिए जा सकते हैं।

ओवैसी ने यूपी में विपक्षी गठबंधन पर कहा- ‘हम 2 अक्टूबर तक अपने गठबंधन का ऐलान करेंगे’

नई दिल्ली (एजेंसी) । एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने सोमवार को कहा कि उनकी पार्टी उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए गठबंधन पर अपने फैसले की घोषणा 2 अक्टूबर तक करेगी। साथ ही, उन्होंने साफ किया कि पार्टी चुनाव लड़ने के लिए पूरी तरह तैयार है और राज्य में मुसलमानों के राजनीतिक प्रतिनिधित्व को मजबूत करने के लिए काम कर रही है। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि विपक्षी दलों को मिलकर काम करने पर विचार करना चाहिए। मीडिया से बात करते हुए ओवैसी ने कहा कि एआईएमआईएम चुनावों की तैयारी कर रही है और उन्हें भरोसा है कि पार्टी के उम्मीदवार उत्तर प्रदेश विधानसभा में पहुंचेंगे। ओवैसी ने कहा, ‘हम 2 अक्टूबर तक यह बता देंगे कि हम किसके साथ गठबंधन करेंगे।’ उन्होंने उत्तर प्रदेश में अपनी पार्टी की राजनीतिक मौजूदगी बढ़ाने के मकसद के बारे में भी बताया और कहा कि मुस्लिम समुदाय के पास ज्यादा राजनीतिक ताकत होनी चाहिए और समुदाय के भीतर से ही नेतृत्व उभरना चाहिए। उन्होंने कहा, ‘हम पूरी तरह तैयार हैं और तैयारियां कर रहे हैं।’



केरल फिल्म फेस्टिवल में किसी फिल्म की स्क्रीनिंग पर रोक नहीं : केंद्र

नई दिल्ली(एजेंसी) । सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने सोमवार को स्पष्ट किया कि रिवरनंतपुरम में होने वाले 18वें इंटरनेशनल डॉक्यूमेंट्री एंड शॉर्ट फिल्म फेस्टिवल ऑफ केरल में किसी भी फिल्म की स्क्रीनिंग की अनुमति से इनकार नहीं किया गया है। मंत्रालय ने कहा कि छह फिल्मों के विस्तृत सिनॉप्सिस मांगे गए हैं, जबकि विषय-वस्तु और प्रकृति के आधार पर कुछ फिल्मों को संबंधित क्षेत्रीय प्राधिकरणों के पास समीक्षा के लिए भेजा गया है। मंत्रालय का यह स्पष्टीकरण कांग्रेस सांसद शशि थरूर के उस दावे के बाद आया है, जिसमें उन्होंने 31 फिल्मों की स्क्रीनिंग की अनुमति रोकें जाने की बात कही थी। थरूर ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से जोड़ते हुए केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव से हस्तक्षेप की मांग की थी। मंत्रालय ने एक्स पर जारी स्पष्टीकरण में कहा कि किसी भी फिल्म की स्क्रीनिंग पर रोक नहीं लगाई गई है। कुछ फिल्मों को उनकी विषय-वस्तु के अनुरूप संबंधित विभागों से समीक्षा प्राप्त करने के लिए क्षेत्रीय प्राधिकरणों के पास भेजा गया है।

विश्व शांति दिवस : प्रेम, करुणा और सद्भावना को अपनाने का लें संकल्प, मुख्यमंत्रियों ने की अपील

बता दें कि दुनिया में शांति, अहिंसा और आपसी सहयोग के महत्व को रेखांकित करने के लिए हर साल 21 सितंबर को अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस मनाया जाता है।

एजेंसी नई दिल्ली । उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सैनी विश्व शांति दिवस पर प्रेम, भाईचारे तथा सह-अस्तित्व की भावना को मजबूत करने की अपील की है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक्स पोस्ट में कहा, ‘विश्व शांति दिवस पर

भारत का शाश्वत संदेश ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ हमें स्मरण कराता है कि संवाद संघर्ष से, सह-अस्तित्व विभाजन से और करुणा हिंसा से कहीं अधिक शक्तिशाली है। आइए, ‘सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः’ की भावना के साथ एक ऐसे विश्व के निर्माण का संकल्प लें, जहां युद्ध नहीं, संवाद, भय नहीं, विश्वास और वैमनस्य नहीं मानवता भविष्य की भाषा बने। विश्व शांति दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।’ राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने एक्स पर पोस्ट किया, ‘विश्व शांति दिवस के अवसर पर ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ के शाश्वत भारतीय दर्शन को आत्मसात करते हुए आइए, हम



भावना को मजबूत करने का संकल्प लें।’ हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सैनी ने एक्स पर लिखा, ‘सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्यभवे। विश्व शांति दिवस के अवसर पर आइए, हम सभी

मिलकर प्रेम, करुणा और सद्भावना को अपनाने का संकल्प लें एवं शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण समाज के निर्माण में अपना योगदान दें।’ मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने एक्स पोस्ट में कहा, ‘अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। प्राचीन काल से हमारे भारत ने विश्व शांति के संदेश के साथ विश्व बंधुत्व, मानव कल्याण और परस्पर सहयोग को बढ़ावा देने के प्रयास किए हैं। यह अवसर प्रेरित करता है कि समानता, सहयोग और सद्भावना से विश्व शांति में सभी सहभागी बनें।’ उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मोहन ने एक्स पर पोस्ट किया, ‘आप सभी को अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस की हार्दिक बधाई

एवं शुभकामनाएं! आइए, प्रेम और सहिष्णुता की भावना को मजबूत कर शांतिपूर्ण विश्व के निर्माण में अपना योगदान दें।’ उत्तर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री चौधरी ने एक्स पर लिखा, ‘सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। विश्व में शांति, सद्भाव और बंधुत्व का संदेश देने वाले ‘अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस’ की समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं। भारत की सनातन संस्कृति ने सदैव ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ के माध्यम से विश्व कल्याण और शांति का मार्ग दिखाया है। आइए, आपसी प्रेम, सामाजिक समरसता और राष्ट्रनिर्माण के संकल्प को मजबूत बनाएं।’

अटल जी ने सत्ता और विपक्ष, दोनों की राजनीतिक मर्यादाओं का दिया मार्गदर्शन

अटल जी का जीवन है लोकतांत्रिक मूल्यों के लिये प्रतिबद्धता का उदाहरण: मुख्यमंत्री

प्रातःकाल एक्सप्रेस, भोपाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीति के महान पुरोधा थे। उन्होंने देश को विकास और सुशासन की नई दिशा दिखाई। स्व. अटल जी भारतीय राजनीति और राष्ट्रजीवन का गौरव हैं। उनका जीवन लोकतांत्रिक मूल्यों के लिये प्रतिबद्धता का उदाहरण है। उनके विचार युगों तक हम सबको सदैव प्रेरणा देते रहेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि श्रद्धेय अटल जी का जीवन हम सभी के लिए मार्गदर्शक प्रकाशपुंज है। वे शुचिता और विनम्रता की प्रतिमूर्ति थे। उनके राष्ट्रवाद और सुशासन के आदर्शों को अपनाया ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोमवार को गेविंदपुरा औद्योगिक प्रक्षेत्र स्थित निजी प्रतिष्ठान के परिसर में भारत रत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी की प्रतिमा का अनावरण किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस निजी प्रतिष्ठान के मोनो का भी लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि स्व. श्री अटल जी का सम्पूर्ण जीवन देशसेवा और जनसेवा को समर्पित रहा। उनके व्यक्तित्व में लोककल्याण और

राजनीतिक शुचिता ही सदैव अटल रहे। मुख्यमंत्री ने कहा कि राजनीति में शुचिता, विचारों में दृढ़ता और व्यवहार में सौम्यता, इन तीन महान गुणों का संगम अटल जी के व्यक्तित्व की पहचान थी। उन्होंने कहा कि अटल जी ने सत्ता और विपक्ष, दोनों में लोकतांत्रिक मर्यादाओं का उदाहरण प्रस्तुत किया। उनकी यह सीख आज भी प्रासंगिक है कि सत्ता आती-जाती रहती है, सरकारें बदलती रहती हैं, लेकिन देश और लोकतंत्र बने रहना चाहिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी के दिखाए रास्ते, उनके राष्ट्रवाद और सुशासन के मॉडल को अपनाया ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। आज जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत विश्व गुरु



बनने की ओर अग्रसर है, तब अटल जी के विचारों और आदर्शों को आत्मसात करना सभी का दायित्व है। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्व. अटल जी ने हमें यह सिखाया कि सत्ता में रहते हुए किस प्रकार का आचरण होना चाहिए और विपक्ष में रहते हुए राजनीतिक मर्यादाओं का पालन कैसे किया जाता है। अटल जी ने विपक्ष में रहते हुए सबसे लम्बे समय तक विपक्ष के नेता का दायित्व निभाया। आपातकाल के दौर में जब लोकतंत्र पर कुठाराघात हुआ, तो उन्होंने करीब 19 माह तक जेल में बिताए थे। भारतीय राजनीति का इतिहास रहा है कि जब राष्ट्र पर संकट आता है, तो हम भारतीय दलों की सीमाएं भूल कर एक संकल्प के साथ खड़े हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री

श्रीमती इंदिरा गांधी के कार्यकाल में जब बांग्लादेश युद्ध चल रहा था, तो श्रद्धेय अटल जी ने खुले दिल से प्रधानमंत्री और सरकार का समर्थन किया था। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अटलजी के संसदीय जीवन का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होंने संसद में खड़े होकर कहा था कि सत्ता तो आती-जाती रहती है और सरकारें भी बदलती रहती हैं, लेकिन देश बना रहना चाहिए, देश का लोकतंत्र कायम रहना चाहिए। मुख्यमंत्री ने इसे भारत के लोकतंत्र की गरिमा और अटल जी के महान व्यक्तित्व का प्रमाण बताया। उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी को यह जानना चाहिए कि हमारे बीच ऐसे अटल जी रहे हैं, जिन्होंने सरकार के नेता के साथ विपक्ष के नेता की भूमिका और उसके दायित्वों का भी आदर्श प्रस्तुत किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने निजी प्रतिष्ठान के स्वामी श्री त्रिलोकी अग्रवाल का आभार व्यक्त कर कहा कि उन्होंने अपने निजी प्रतिष्ठान में अटल जी की प्रतिमा लगाकर समाज को उनके प्रेरणादायी जीवन से जोड़ने का पुनीत कार्य किया है। कार्यक्रम में मौजूद पूर्व राज्यपाल श्री कसान सिंह सोलंकी ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव प्रदेश के मुख्य सेवक हैं।

बड़े शाकाहारी वन्यजीव निभाते हैं जंगल के पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका

बांधवगढ़ में बढ़ रहा गौर का कुनबा, कान्हा में वन भैंसा पुनर्स्थापना से मजबूत होगा पारिस्थितिकी तंत्र

प्रातःकाल एक्सप्रेस, भोपाल

मध्यप्रदेश के बांधवगढ़ एवं कान्हा टाइगर रिजर्व में बड़े शाकाहारी वन्यजीवों के संरक्षण और पुनर्स्थापना के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं। बांधवगढ़ में गौर (इंडियन बायसन) की संख्या बढ़ाने



पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है, वहीं कान्हा टाइगर रिजर्व में वन भैंसा (वाइल्ड बफेलो) को पुनः बसाने की प्रक्रिया जारी है। गौर और वन भैंसा देखने में कुछ समान प्रतीत हो सकते हैं, लेकिन दोनों अलग-अलग प्रजातियों से संबंधित हैं और इनके आवास तथा खान-पान में भी अंतर है। बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व के क्षेत्र संचालक श्री अनुपम सहाय के अनुसार गौर, जिसे भारतीय बायसन

भी कहा जाता है, एशिया का सबसे बड़ा जंगली गौवंश है। बांधवगढ़ में गौर वर्ष 1998 में विलुप्त हो गया था। इसके बाद वर्ष 2011-12 में कान्हा से 50 गौर लाकर बांधवगढ़ में पुनः स्थापित किए गए। इनकी संख्या बढ़कर लगभग 170 तक पहुंची। आनुवंशिक विविधता बनाए रखने के उद्देश्य से सतपुड़ा से भी गौर लाने की योजना बनाई गई। फरवरी 2025 में 23 गौर, जिनमें 18 मादा और 5 नर शामिल थे, बांधवगढ़ लाए गए। इसके बाद जनवरी 2026 में दूसरे चरण में 27 गौर, जिनमें 22 मादा और 5 नर शामिल थे, लाए गए। इस प्रकार 50 नए गौर लाने का लक्ष्य पूरा किया गया। इन वन्यजीवों की निगरानी के लिए वीएचएफ कॉलर, हॉर्न स्लीव और ईयर टैग लगाए गए हैं। वर्तमान में बांधवगढ़ लैंडस्केप में गौर की संख्या लगभग 220 से 240 के बीच बताई गई है। कान्हा टाइगर रिजर्व में वन भैंसा यानी वाइल्ड बफेलो को पुनः बसाने का कार्य किया जा रहा है।

श्रमिकों और नियोक्ताओं को एक ही डिजिटल प्लेटफॉर्म पर जोड़ने की पहल

प्रातःकाल एक्सप्रेस, भोपाल

प्रदेश में निर्माण श्रमिकों को सुरक्षित, सम्मानजनक और पारदर्शी तरीके से रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मध्यप्रदेश भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण मंडल द्वारा डिजिटल लेबर चौक मोबाइल एप्लीकेशन विकसित की गई है। यह डिजिटल प्लेटफॉर्म निर्माण श्रमिकों और नियोक्ताओं को सीधे जोड़ने का कार्य कर रहा है। डिजिटल लेबर

एप्लीकेशन के माध्यम से पंजीकृत निर्माण श्रमिकों को मध्यप्रदेश भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण मंडल की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी भी उपलब्ध होगी। श्रमिक मातृत्व सहायता, चिकित्सा सहायता, शिक्षा सहायता, विवाह सहायता, आवास और पेंशन सहित विभिन्न योजनाओं के संबंध में जानकारी प्राप्त कर आवेदन की प्रक्रिया पूरी कर सकेगे। इससे श्रमिकों को रोजगार के साथ सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में भी सुविधा होगी। डिजिटल लेबर चौक एप्लीकेशन के प्रति निर्माण श्रमिकों और नियोक्ता उत्साहित हैं। ऐप लॉन्च होने के बाद से अब तक इसे 10 हजार से अधिक बार डाउनलोड किया जा चुका है। एप्लीकेशन पर 16,032 निर्माण श्रमिक और 2,228 नियोक्ता अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुके हैं। प्रदेश के पंजीकृत निर्माण श्रमिक गूगल प्ले स्टोर से डिजिटल लेबर चौक ऐप डाउनलोड का आई एम अ वर्कर विकल्प के माध्यम से पंजीकरण कर सकते हैं। इसी प्रकार नियोक्ता एवं ठेकेदार आई एम एन एम्पलायर विकल्प के माध्यम से अपना पंजीकरण कर सकते हैं।

डिजिटल लेबर चौक ऐप से सुगम होगा निर्माण श्रमिकों का जीवन

चौक के माध्यम से निर्माण श्रमिकों को अब सुबह लेबर चौकहों पर खड़े होकर काम का इंतजार करने की आवश्यकता नहीं होगी। श्रमिक घर बैठे अपनी प्रोफाइल तैयार कर अपनी योग्यता के अनुरूप रोजगार के अवसर तलाश सकेंगे। वहीं ठेकेदार, बिल्डर और अन्य नियोक्ता अपनी आवश्यकता के अनुसार मिस्त्री, मजदूर सहित विभिन्न श्रेणियों के कुशल एवं अकुशल श्रमिकों को ऐप के माध्यम से खोजकर सीधे संपर्क कर सकेंगे। डिजिटल लेबर चौक

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मध्यप्रदेश स्थापना दिवस की बैठक में दिए निर्देश

प्रातःकाल एक्सप्रेस, भोपाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि वर्ष 2026 समृद्ध किसान-समृद्ध प्रदेश की थीम पर किसान कल्याण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। एक नवम्बर को वर्ष 2026 का मध्यप्रदेश स्थापना दिवस कृषि विकास और किसान कल्याण पर केंद्रित हो। उन्नत कृषि, प्राकृतिक खेती, कृषि में नवाचार आदि पर विशेष रूप से प्रदर्शनियां आयोजित की जाएं तथा कृषि के क्षेत्र में नवाचार करने और उपलब्धियां अर्जित करने वाले कृषकों, उद्यमियों, युवाओं को सम्मानित किया जाए। उन्होंने कहा कि राज्य स्तर पर गतिविधियों के साथ ही जिलों में भी उत्साह और उत्पन्न के साथ कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। सभी शासकीय भवनों पर स्थापना दिवस पर एक नवम्बर की रात्रि में रोशनी की जाए। प्रदेश की प्रतिभाओं को अपनी कला, योग्यता और क्षमता के प्रदर्शन का मौका प्रदान करने के लिये कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। स्थापना दिवस समारोह प्रदेश का उत्सव है। राज्य और जिलास्तरीय कार्यक्रमों में अधिक से अधिक जनभागीदारी सुनिश्चित की जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ये निर्देश मध्यप्रदेश स्थापना दिवस के संबंध में आज मंत्रालय में हुई बैठक में दिए।

रीवा में हुए बलराम कृषि महोत्सव में आए किसानों से किया संवाद

स्लीमनाबाद टनल का काम पूर्णता की ओर, शीघ्र ही रीवा जिले के खेतों को मिलेगा नर्मदा जल : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

प्रातःकाल एक्सप्रेस, भोपाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि खेती-किसानी विशेषकर उद्यानिकी और प्राकृतिक खेती में रीवा का जवाब नहीं। उन्होंने कहा कि किसानों की मेहनत और लगन से यहां धान, गेहूं, चना, मसूर, अलसी और सोयाबीन का भरपूर उत्पादन हुआ है। इससे रीवा जिले की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सोमवार को मंत्रालय से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से रीवा जिले में हुए बलराम कृषि महोत्सव में किसानों को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने किसानों से कहा कि स्लीमनाबाद टनल का काम तेजी से पूरा होने की ओर है। इस टनल के पूरा होते ही रीवा जिले के खेतों तक नर्मदाजी का पावन जल पहुंचेगा। इससे क्षेत्र में सिंचाई और पेयजल की सुविधा बढ़ेगी। उन्होंने बताया कि रीवावासियों को त्योहार, लोही, सिरसौर और सेमरिया की सिंचाई परियोजनाएं पूरी होने पर करीब एक लाख 32 हजार हैक्टेयर भूमि को सिंचाई सुविधा मिलेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने किसानों को बताया कि जिनके पास भूमि के पट्टे हैं परंतु रजिस्ट्री नहीं है, ऐसे सभी पट्टेधारकों को राज्य सरकार रजिस्ट्री कराकर निःशुल्क प्रदाय करेगी। ऐसे 50 लाख पट्टों की रजिस्ट्री का शुल्क (करीब 4 हजार करोड़ रुपए) राज्य सरकार वहन करेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जिले के



जनप्रतिनिधियों और 4 प्रगतिशील किसानों से आत्मीय संवाद कर उनके द्वारा परम्परागत खेती से अलावा वर्तमान में की जा रही नवाचारी खेती के बाद तब और अब के अनुभवों की जानकारी ली। किसानों ने बताया कि उन्नत कृषि यंत्रों से तकनीकी खेती करने और जैविक खाद के इस्तेमाल से प्राकृतिक खेती करने में ज्यादा फायदा होता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जिले भर से आए किसानों से प्राकृतिक खेती, उद्यानिकी, श्रीअन्न, पशुपालन और फसल विविधीकरण अपनाने

महिला नव आरक्षकों के स्वास्थ्य परीक्षण हेतु दो दिवसीय शिविर आयोजित



प्रातःकाल एक्सप्रेस, भोपाल

विशेष पुलिस महानिदेशक (प्रशिक्षण) के निर्देशों के अनुपालन में तथा उनिनिदेशक, मध्यप्रदेश पुलिस अकादमी भोपाल श्री रामजी श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में पुलिस प्रशिक्षण शाला भोपाल में प्रशिक्षणरत महिला नव आरक्षकों के स्वास्थ्य परीक्षण हेतु 19 एवं 20 सितंबर 2026 को दो दिवसीय स्वास्थ्य

274 प्रशिक्षुओं का स्वास्थ्य परीक्षण कर चिकित्सकों ने दिए उपचार एवं बेहतर स्वास्थ्य के लिए आवश्यक परामर्श

परीक्षण शिविर आयोजित किया गया। पुलिस अधीक्षक श्रीमती यास्मीन जह्रा की उपस्थिति एवं मार्गदर्शन में आयोजित शिविर में LBS Hospital भोपाल के नोडल अधिकारी श्री हरविंदर सिंह, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. वैशाली पाठक तथा जनरल फिजिशियन डॉ. हारून सिद्दीकी द्वारा प्रशिक्षुओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। इस दौरान प्रशिक्षुओं के ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर एवं ब्लड प्रोफाइल सहित आवश्यक स्वास्थ्य जांच की गई। शिविर के प्रथम दिवस ऐसे प्रशिक्षुगार्थियों को प्राथमिकता से स्वास्थ्य परीक्षण के लिए चिन्हित किया गया, जो लगातार स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण प्रशिक्षण सुचारु रूप से प्राप्त नहीं कर पा रहे थे। प्रथम दिवस उपलब्ध 104 प्रशिक्षुगार्थियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया तथा डॉ. वैशाली पाठक द्वारा आवश्यक उपचार एवं स्वास्थ्य

संबंधी परामर्श प्रदान किया गया। शिविर के द्वितीय दिवस 170 प्रशिक्षुओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। इस प्रकार दो दिवस में कुल 274 महिला नव आरक्षकों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। चिकित्सकों द्वारा परीक्षण के साथ-साथ आवश्यक उपचार, स्वास्थ्य संबंधी सावधानियों तथा स्वयं के उत्तम स्वास्थ्य को बनाए रखने के संबंध में आवश्यक परामर्श भी दिया गया। मध्यप्रदेश पुलिस प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत पुलिसकर्मियों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को प्रशिक्षण की गुणवत्ता का महत्वपूर्ण आधार मानते हुए स्वास्थ्य परीक्षण एवं आवश्यक चिकित्सकीय परामर्श की व्यवस्था सुनिश्चित की जा रही है, ताकि प्रशिक्षु स्वस्थ एवं बेहतर शारीरिक क्षमता के साथ अपने प्रशिक्षण को प्रभावी ढंग से पूर्ण कर सकें।

दो कार्यों में लापरवाही पर ठेकेदारों एवं संबंधित अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई के निर्देश

निर्माण कार्यों की गुणवत्ता में लापरवाही बर्दाश्त नहीं : एमडी यादव

प्रातःकाल एक्सप्रेस, भोपाल

लोक निर्माण विभाग के कार्यों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए तैयार कार्य योजना के अंतर्गत 20 सितम्बर को सात जिलों में 35 निर्माण कार्यों का औचक निरीक्षण किया गया। मुख्य अभियंताओं के सात दलों ने नर्मदापुरम, जबलपुर, दतिया, आलीराजपुर, मऊगंज, आगर-मालवा और टीकमगढ़ जिलों में रैंडम आधार पर चयनित निर्माण कार्यों की गुणवत्ता एवं प्रगति का स्थल निरीक्षण किया। निरीक्षण किए गए कार्यों में लोक निर्माण विभाग सड़क एवं पुल के 21, परियोजना क्रिया-वन्धन इकाई (पीआईयू-भवन) के चार, मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम के पांच, मध्यप्रदेश भवन विकास निगम के तीन तथा राष्ट्रीय राजमार्ग के दो कार्य शामिल हैं। निरीक्षण दलों से प्राप्त प्रतिवेदनों की समीक्षा मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम के प्रबंध संचालक श्री भरत यादव ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से की। बैठक में प्रमुख अभियंता सड़क एवं पुल श्री

आर.एल. वर्मा, प्रमुख अभियंता एमपीआरडीसी श्री के.पी.एस. राणा सहित समस्त मुख्य अभियंता, अधीक्षण यंत्री, कार्यपालन यंत्री एवं निरीक्षणकर्ता अधिकारी उपस्थित रहे। जबलपुर जिले में मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम के अंतर्गत परफॉर्मेस गारंटी अवधि वाले जबलपुरडुड्डहिरण नदी मार्ग खंड की स्थिति संतोषजनक नहीं पाई गई। प्रबंध संचालक श्री यादव ने इसे गंभीरता से लेते हुए संबंधित ठेकेदार मेसर्स बागड इन्फ्रा प्रोजेक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद को ब्लैकलिस्ट किए जाने की कार्रवाई प्रारंभ



करने के निर्देश मुख्य अभियंता एमपीआरडीसी को दिए। आलीराजपुर जिले में लोक निर्माण विभाग सड़क एवं पुल के अंतर्गत निर्माणाधीन रिंगाले-मालमसुरी से खंडीवाव-भंडारी निरीक्षणकर्ता अधिकारी श्री आर.के. पाठक, उपयंत्री श्री आर.के. अरजरिया फलिया मार्ग की प्रगति और गुणवत्ता भी संतोषजनक नहीं पाई गई। संबंधित कार्यपालन यंत्री, अनुविभागीय अधिकारी, उप यंत्री तथा ठेकेदार मेसर्स डेड राम को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए गए। प्रबंध संचालक श्री यादव ने संभागीय प्रबंधक श्री राजेश दायमा, सहायक संभागीय प्रबंधक श्री पारस रत्नाकर, प्रबंधक सुश्री

दिव्यांशी जैन तथा निर्माण एजेंसी मेसर्स मंगलम बिल्डकॉन प्राइवेट लिमिटेड के कार्य की सराहना की। टीकमगढ़ जिले में लोक निर्माण विभाग भवन के अंतर्गत शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय लाखरुढ़ के भवन निर्माण कार्य की गुणवत्ता संतोषजनक पाई गई। इसके लिए कार्यपालन यंत्री श्री के.एस. परस्ते, अनुविभागीय अधिकारी श्री आर.के. पाठक, उपयंत्री श्री आर.के. अरजरिया तथा ठेकेदार मेसर्स यादव ट्रेडर्स की प्रशंसा की गई। निरीक्षण के दौरान 13 निर्माण कार्यों में आंशिक सुधार की आवश्यकता पाई गई। संबंधित अधिकारियों और निर्माण एजेंसियों को चिन्हित कमियों को दूर कर आवश्यक सुधार कार्य शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए गए। प्रबंध संचालक श्री यादव ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि औचक निरीक्षण प्रतिवेदनों में की गई अनुशंसाओं का समयबद्ध पालन सुनिश्चित किया जाए। मुख्य अभियंता कॉन्फ्रेंस में लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह द्वारा दिए गए

लगातार बैठे रहने से किडनी हो सकती है खराब, डॉक्टर ने बताया कब बढ़ जाता है खतरा



लगातार बैठे रहने से भी हमारी किडनी को सेहत पर असर पड़ता है. लोग इस आदत को नॉर्मल मानकर अपना रूटीन फॉलो करते हैं. सीटिंग जॉब या दूसरी वजहों से लगातार बैठने से किडनी पर क्या असर होता है? जानें..

आजकल का कामकाज ज्यादातर डेस्क पर बैठकर ही होता है, इसलिए दिन में कई घंटे लगातार बैठे रहना लगभग हमारी रोज़मर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा बन गया है. लेकिन लंबे समय तक शारीरिक रूप से एक्टिव न रहना सिर्फ कमर दर्द या वजन बढ़ने की वजह नहीं बनता, बल्कि इसका असर किडनी की सेहत पर भी पड़ सकता है. हालाँकि, सिर्फ बैठे रहने से सीधे तौर पर किडनी खराब नहीं होती, लेकिन लंबे समय तक बैठे रहने वाली लाइफस्टाइल कई ऐसी समस्याओं को बढ़ावा दे सकती है, जो आगे चलकर किडनी की बीमारी का खतरा बढ़ा सकती हैं.लंबे समय तक फिजिकली एक्टिव न रहने से वजन बढ़ सकता है, शरीर में इंसुलिन ठीक से काम नहीं कर पाता और मेटाबॉलिक हेल्थ भी खराब हो सकती है. इसके साथ ही ब्लड प्रेशर बढ़ने का खतरा भी रहता है. डायबिटीज और हाई ब्लड प्रेशर, दोनों ही क्रॉनिक किडनी डिजीज के बड़े जोखिम कारकों में शामिल हैं. समय के साथ ये दोनों स्थितियां किडनी की छोटी-छोटी ब्लड वेसल्स और उन हिस्सों को नुकसान पहुंचा सकती हैं, जो खून को फिल्टर करने का काम करते हैं. इससे धीरे-धीरे किडनी की काम करने की क्षमता कम हो सकती है.

ब्लड सर्कुलेशन पर पड़ता है असर
डॉ. अनुपम राय (एडिशनल डायरेक्टर, नेफ्रोलॉजी और किडनी ट्रांसप्लांट, आकाश हेल्थकेयर मल्टी-स्पेशियलिटी हॉस्पिटल) बताते हैं कि एक और ऐसी चीज है जिस पर अक्सर ध्यान नहीं दिया जाता. वह है ब्लड सर्कुलेशन. जब हम लंबे समय तक बैठे रहते हैं, तो हमारी मांसपेशियां कम काम करती हैं और शरीर की कुल शारीरिक गतिविधि भी कम हो जाती है. अगर इसके साथ खान-पान ठीक न हो, एक्सरसाइज कम हो और नींद भी पूरी न हो, तो शरीर में ऐसा मेटाबॉलिक माहौल बन सकता है, जिससे किडनी पर अतिरिक्त दबाव पड़ सकता है.अच्छी बात यह है कि रोज़मर्रा की ज़िंदगी में छोटे-छोटे बदलाव करके काफी फायदा हो सकता है. जिन लोगों का काम डेस्क पर बैठकर होता है, उन्हें लगातार कई घंटों तक बैठे रहने से बचना चाहिए. बीच-बीच में थोड़ी देर के लिए उठकर चलना, फोन पर बात करते समय टहलना, जहां संभव हो वहां लिफ्ट की जगह सीढ़ियों का इस्तेमाल करना और हफ्ते में नियमित रूप से थोड़ी तेज़ या मध्यम स्तर की एक्सरसाइज करना दिल और शरीर की मेटाबॉलिक हेल्थ को बेहतर रखने में मदद कर सकता है.

कई मामलों में लक्षणों का नहीं चलता पता
कई भी याद रखना जरूरी है कि किडनी की बीमारी कई बार बिना किसी साफ लक्षण के धीरे-धीरे बढ़ सकती है. जिन लोगों का वजन ज्यादा है, जिन्हें डायबिटीज या हाई ब्लड प्रेशर है, परिवार में किसी को किडनी की बीमारी रही है या किडनी की बीमारी के दूसरे जोखिम हैं, उन्हें अपने डॉक्टर से बात करके यह समझना चाहिए कि उन्हें किडनी की जांच कब और कितनी बार करवानी चाहिए.

इसलिए किडनी की सेहत को शरीर की बाकी सेहत से अलग करके नहीं देखना चाहिए. जो चीजें हमारे दिल, ब्लड वेसल्स और मेटाबॉलिक हेल्थ के लिए अच्छी हैं, वे आमतौर पर किडनी के लिए भी फायदेमंद होती हैं. लंबे समय तक लगातार बैठे रहने के बीच छोटे-छोटे ब्रेक लेना एक आसान लाइफस्टाइल बदलाव है, जो लंबे समय तक किडनी को स्वस्थ रखने की कोशिश का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकता है.

उत्तर प्रदेश 2027 का विधानसभा चुनाव: भाजपा का डेमेज कंट्रोल का प्रयास

लोकसभा चुनाव के बाद से ही अपनी उपेक्षा और अति-पिछड़ाई के आरक्षण के मुद्दे को लेकर सार्वजनिक रूप से नाराजगी जाहिर कर रहे निषाद पार्टी के अध्यक्ष और कैबिनेट मंत्री संजय निषाद को मनाने के लिए भाजपा के प्रदेश प्रभारी विनोद तावड़े खुद उनके आवास पर पहुंचे।

उत्तर प्रदेश के राजनीतिक इतिहास में साल 2024 का लोकसभा चुनाव एक ऐसे मोड़ के रूप में दर्ज हो चुका है, जिसने सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की अजेय मानी जाने वाली छवि को गहरा धक्का पहुंचाया। दिल्ली की सत्ता पर लगातार तीसरी बार काबिज होने के बावजूद, देश के सबसे बड़े और राजनीतिक रूप से सबसे महत्वपूर्ण राज्य उत्तर प्रदेश में पार्टी की सीटों का आंकड़ा लगभग आधा रह जाना एक ऐसी चेतावनी थी, जिसे नजरअंदाज करना आत्मघाती साबित हो सकता था। इस चुनावी झटके ने जहाँ एक ओर समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के गठबंधन को नई ऊर्जा दी, वहीं दूसरी ओर भाजपा के शीर्ष नेतृत्व को आत्ममंथन और अपनी रणनीतियों को नए सिरे से परिभाषित करने पर मजबूर कर दिया। अब जबकि राज्य साल 2027 के विधानसभा चुनाव के मुहाने पर खड़ा है, भाजपा का पूरा ध्यान केवल सत्ता बचाने पर नहीं, बल्कि अपनी खोई हुई राजनीतिक जमीन को वापस पाने और %मिशन हैट्रिक% को सफल बनाने के लिए एक व्यापक, आक्रामक और बहुआयामी %डेमेज कंट्रोल% (क्षति नियंत्रण) अभियान पर केंद्रित हो चुका है। यह संपादकीय विश्लेषण इसी बात की पड़ताल करता है कि कैसे भाजपा अपनी पिछली गलतियों से सीखकर 2027 के महासंग्राम के लिए एक अभेद्य चक्रव्यूह रचने का प्रयास कर रही है।यदि 2027 में लखनऊ की गद्दी पर दोबारा भगवा ध्वज लहराना है, तो संगठन की बुनियादी कमियों को दूर करना और सामाजिक व सांगठनिक समीकरणों को नए सिरे से संधाना पहली और अनिवार्य शर्त बन चुकी है।सांगठनिक कच्चावट के साथ-साथ भाजपा का यह डेमेज कंट्रोल केवल पार्टी कैडर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सहयोगियों और प्रमुख चेहरों को जोड़े रखने के लिए एक आक्रामक राजनीतिक घेराबंदी में बदल चुका है। इसी कड़ी में हाल ही में दो बेहद महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाक्रम सामने आए हैं, जो भाजपा की इस गंभीर रणनीति को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। पहला घटनाक्रम रायबरेली सदर से भाजपा विधायक अदिति सिंह का है। पिछले कुछ समय से राजनीतिक गलियाओं में अदिति सिंह को कांग्रेस में संभावित वापसी को लेकर तरह-तरह की अटकलें और कयास लगाए जा रही थे। इन अटकलों को पूरी तरह खारिज करते हुए और



विपक्ष के मनोबल को तोड़ने के लिए अदिति सिंह ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से एक उच्च स्तरीय मुलाकात की। इस बैठक ने न केवल सभी अफवाहों पर पूरी तरह विराम लगा दिया, बल्कि यह भी साफ कर दिया कि रायबरेली जैसे गांधी परिवार के पारंपरिक गढ़ में भाजपा अपने किले को अभेद्य रखने के लिए पूरी तरह मुस्तैद है।इसी रणनीति का दूसरा और अधिक महत्वपूर्ण हिस्सा अपने नाराज सहयोगियों को संभालना है, जिसमें भाजपा का शीर्ष नेतृत्व कोई कसर नहीं छोड़ रहा है। लोकसभा चुनाव के बाद से ही अपनी उपेक्षा और अति-पिछड़ाई के आरक्षण के मुद्दे को लेकर सार्वजनिक रूप से नाराजगी जाहिर कर रहे निषाद पार्टी के अध्यक्ष और कैबिनेट मंत्री संजय निषाद को मनाने के लिए भाजपा के प्रदेश प्रभारी विनोद तावड़े खुद उनके आवास पर पहुंचे। दोनों नेताओं के बीच हुई इस मैराथन बैठक का मुख्य उद्देश्य सहयोगी दलों के भीतर पनप रहे असंतोष को समय रहते दबाना और 2027 से पहले एनडीए के कुनबे को पूरी तरह एकजुट रखना है। भाजपा भली-भांति जानती है कि उत्तर प्रदेश जैसी जटिल राजनीतिक पिच पर अनुप्रिया पटेल की अपना दल (एस), ओम प्रकाश राजभर की सुभासपा और संजय निषाद की निषाद पार्टी जैसे छोटे दल अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विनोद तावड़े का खुद चलकर संजय निषाद के घर जाना यह दिखाता है कि भाजपा अब किसी भी बड़े या छोटे सहयोगी को खोने का जोखिम नहीं उठा सकती और वह गठबंधन के भीतर सत्ता और सम्मान का नया संतुलन बनाने के लिए तैयार है।इसके अतिरिक्त, युवाओं और रोजगार के मुद्दे

पर विपक्ष के आक्रामक हमलों को कुंद करने के लिए सरकार ने अपनी प्रशासनिक मशीनरी को पूरी तरह से झोंक दिया है। पिछले कुछ समय में हुए पेपर लीक मामले ने सरकार की साख पर जो बड़ा लगाया था, उसे धोने के लिए कड़े कानून बनाए गए हैं और पारदर्शी तरीके से भर्ती परीक्षाओं के आयोजन पर जोर दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ स्वयं युवाओं को नियुक्ति पत्र बांटने के कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं, ताकि यह संदेश दिया जा सके कि सरकार युवाओं के भविष्य के प्रति अत्यंत संवेदनशील है। इसके समानांतर, %वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट% और राज्य में आ रहे भारी-भरकम औद्योगिक निवेश के जरिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए अवसर सृजित करने के दावों को सोशल मीडिया और जमीनी अभियानों के माध्यम से जनता के बीच ले जाया जा रहा है। विपक्ष द्वारा महंगाई और बेरोजगारी पर बनाए जा रहे माहौल का मुकाबला करने के लिए भाजपा अपनी %डबल इंजन सरकार% के विकास कार्यों-जैसे एक्सप्रेसवे का जाल, हवाई अड्डों का विकास और बेहतर कानून-व्यवस्था-को मुख्य ढाल बना रही है।एक और महत्वपूर्ण मोर्चा जिस पर भाजपा बहुत बारीकी से काम कर रही है, वह है टिकट वितरण और एंटी-इंकबेंसी का प्रबंधन। पार्टी के आंतरिक सूत्रों और स्वतंत्र एजेंसियों के माध्यम से प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र का गहन और बहुस्तरीय जमीनी सर्वे कराया जा रहा है। इस सर्वे में न केवल विधायकों की लोकप्रियता और उनके कामकाज का आकलन किया जा रहा है, बल्कि जनता के बीच उनकी छवि और कार्यकर्ताओं के साथ उनके व्यवहार

को भी मापा जा रहा है। इस बात के स्पष्ट संकेत हैं कि सत्ता विरोधी लहर को काटने और जनता के गुस्से को शांत करने के लिए भाजपा 2027 के चुनावों में 30 से 40 प्रतिशत मौजूदा विधायकों के टिकट काट सकती है या उनके क्षेत्र बदल सकती है। नए, युवा और स्थानीय स्तर पर स्वीकार्य चेहरों को मौका देकर पार्टी एक %नया और ऊर्जावान% विकल्प पेश करने की तैयारी में है, जिससे बगावत के खतरों को कम से कम किया जा सके। आजमगढ़, अयोध्या, सहारनपुर और मुरादाबाद जैसे मंडलों की हारी हुई सीटों और विशेषकर उन 16 जिलों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है जहाँ पार्टी का प्रदर्शन सबसे खराब रहा था, और इन क्षेत्रों की कमान सीधे वरिष्ठ मंत्रियों और संगठन के शीर्ष पदाधिकारियों को सौंप दी गई है।

अंततः, उत्तर प्रदेश 2027 का चुनाव केवल देश के सबसे बड़े राज्य की सत्ता का फैसला नहीं करेगा, बल्कि यह 2029 के अगले लोकसभा चुनाव की दशा और दिशा भी तय करेगा। भाजपा भली-भांति जानती है कि दिल्ली का रास्ता लखनऊ से होकर ही गुजरता है और यूपी में किसी भी प्रकार की स्थिरता उसके राष्ट्रीय राजनीतिक प्रभुत्व को संकट में डाल सकती है। वर्तमान में भाजपा द्वारा किए जा रहे डेमेज कंट्रोल के प्रयास-चाहे वह अदिति सिंह की मुख्यमंत्री से मुलाकात हो या विनोद तावड़े का संजय निषाद के घर पहुंचना-यह दर्शाते हैं कि पार्टी अपनी पराजय को स्वीकार कर आत्मसंतुष्टि के जाल से बाहर निकल चुकी है और एक अगुशासित सेना की तरह अपनी कमियों को सुधारने में जुट गई है। विपक्ष के सामाजिक नैरेटिव को तोड़ना, कार्यकर्ताओं को दोबारा सक्रिय

संपादकीय

मुश्किलों से घिरीं ममता



है कि ममता बनर्जी विधानसभा में भी अपना

प्रभाव खो चुकी हैं और लोकसभा में भी। यह भी ध्यान रहे कि उनके कुछ राज्यसभा सदस्य भी पार्टी छोड़ चुके हैं।

यह संभवतः पहली बार है, जब किसी राज्य में लगातार तीन कार्यकाल पूरे करने वाली कोई पार्टी इस तरह बिखरी हो। राजनीति में कुछ भी हो सकता है, लेकिन इस समय ममता बनर्जी जिस तरह चौतरफा संकट से घिरी हुई हैं, उसे देखते हुए यह कहना कठिन है कि राजनीतिक रूप से उनकी वापसी हो सकती है। वैसे तो जैसे तृणमूल कांग्रेस में टूट-फूट हुई, वैसे ही महाराष्ट्र में शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के साथ भी हो चुकी है, लेकिन इन दोनों दलों के मुकाबले ममता को पार्टी राजनीतिक रूप से कहीं अधिक सशक्त थी। ममता चुनाव आयोग के फैसले को चुनौती देंगी, लेकिन इसमें संदेह है कि उन्हें राहत मिल सकेगी।

तृणमूल कांग्रेस की दुर्गति यही बता रही है कि

विचारधाराविहीन राजनीतिक दलों का भविष्य उज्ज्वल नहीं होता और जैसे ही वे सत्ता खोते हैं अथवा सत्ता पाने में सक्षम नहीं दिखने लगते, उनमें बिखराव शुरू हो जाता है।

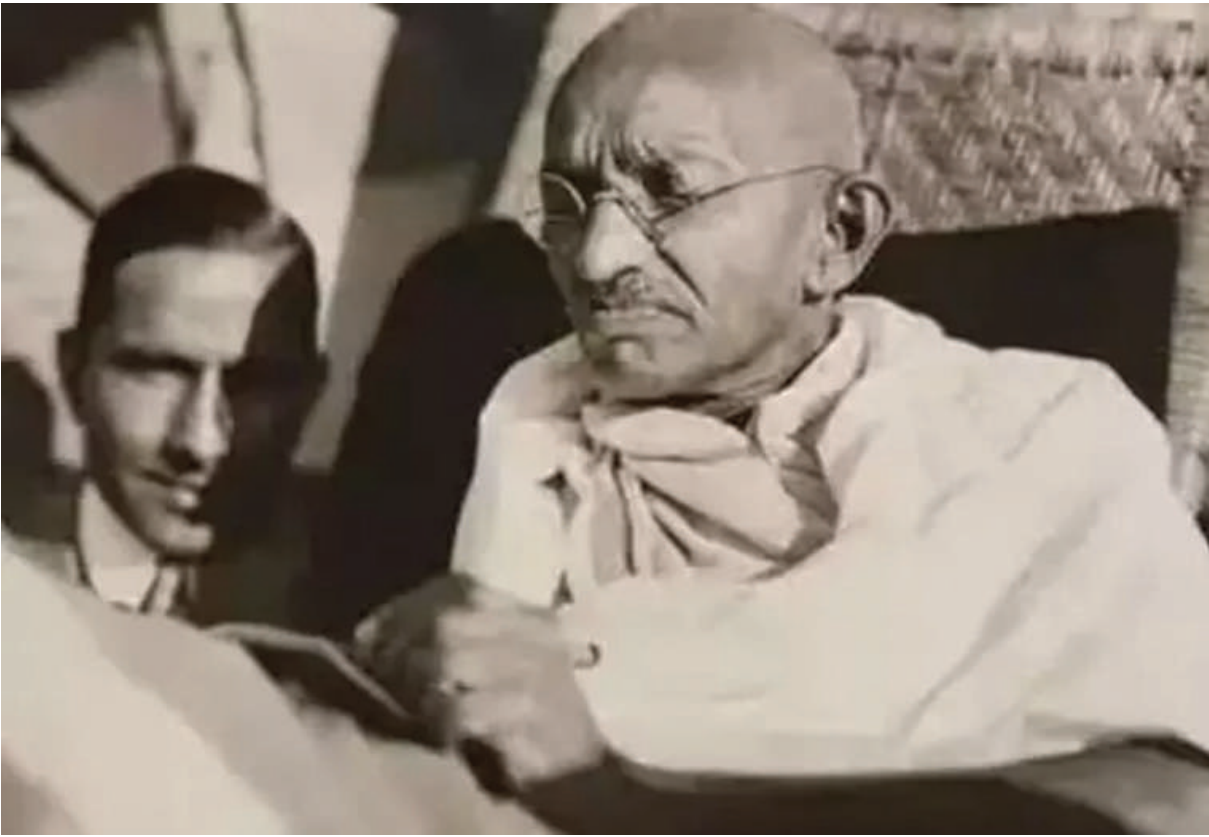
तृणमूल कांग्रेस में बिखराव का मूल कारण यह है कि परिवर्तन के नारे के साथ सत्ता में आई ममता बनर्जी ने मनमाने तरीके से शासन चलाया। उन्होंने भ्रष्ट और अराजक तत्वों को संरक्षण प्रदान किया। इससे ऊबी जनता ने मौका मिलते ही उन्हें सबक सिखाया। ऐसा ही वामदलों के साथ हुआ था। दोनों में साझा यह है कि उन्होंने दमनात्मक तरीके से शासन चलाया। भले ही ममता बनर्जी अपनी पार्टी की दुर्गति के लिए भाजपा और चुनाव आयोग को दोष दें, लेकिन अपनी स्थिति के लिए वही जिम्मेदार हैं। तृणमूल कांग्रेस की दुर्गति से सत्ता में आकर मनमानी करने वाले राजनीतिक दलों को सबक लेना चाहिए।

गांधी की नजर में अवैध है, यहूदियों का इजरायल

संसार की अन्य अनेक जातियों की तरह यहूदी भी उसी देश को अपना देश और अपना घर क्यों नहीं बना लेते जहाँ उनका जन्म हुआ और जहां वे जीविकोपार्जन करते हैं? यहूदियों के वतन के रूप में फिलिस्तीन उन्हें पूर्णतः या अंशतः वापस मिल जाये, इसके लिए स्वाभिमानी अरबों को तबाह करना निश्चय ही मानवता के विरुद्ध अपराध होगा।नाजी जर्मनी में यहूदियों के उत्पीड़न से दुखी होकर महात्मा गांधी ने उनके प्रति गहरी मानवीय सहानुभूति व्यक्त की थी। गांधीजी ने ईसाई जगत द्वारा यहूदियों पर किए गए अत्याचारों को ईसाई धर्म के नाम पर कलंक माना था। उन्होंने जर्मनी के यहूदियों को सलाह दी थी कि वे जिस देश के नागरिक हैं, वहीं अहिंसक संघर्ष के माध्यम से अपने अधिकार प्राप्त करें, लेकिन जब यहूदियों ने ब्रिटेन और अमेरिका के समर्थन से फिलिस्तीन में अपना राष्ट्र स्थापित करने का मार्ग अपनाया और इसके लिए अरबों के अधिकारों का दमन शुरू हुआ, तब गांधीजी ने इसका विरोध किया। उनका स्पष्ट मत था कि फिलिस्तीन अरबों का है और यहूदियों द्वारा फिलिस्तीनियों का दमन करना पाप है।गांधीजी ने यहूदियों की स्थिति की तुलना दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों और भारत में दलितों के साथ किए जाने वाले भेदभाव से की थी। उनका विश्वास था कि उत्पीड़ित लोगों को हिंसा के बजाय अहिंसक संघर्ष के माध्यम से अपने अधिकार प्राप्त करने चाहिए। 12 अक्टूबर 1929 को गांधीजी ने कहा था - हिंदू धर्म में सबसे बड़ी बुराई छूआछूत ही है। पश्चिम के देशों में यहूदियों को अछूत मानने की भावना पाई जाती है। वह ऐसी ही बुराई है। उन लोगों को शहर से बाहर अछूत बस्तियों (घेटों) में रहने के लिए बाध्य किया जाता है। यह दोष हमारे यहां कब आया, इसका इतिहास मुझे मालूम नहीं है। जब तथाकथित उच्च वर्ग के लोगों ने ऐसे लोगों से, जिन्हें वे नीचे दर्जे का समझते थे, अपने आपको अलग रखने की बात सोची, सामाजिक रूप से इसका आरंभ तब से माना जा सकता है। अक्टूबर 1931 में उन्होंने कहा था- %सामी-विरोधी (यहूदी-विरोधी) प्रवृत्ति वास्तव में बर्बरता का एक अवशेष है। यहूदियों के प्रति इस विरोध की भावना को मैं कभी समझ ही नहीं पाया हूं। बिना किसी अपराध के यहूदी लोग पहले ही कितनी यातना सह चुके हैं। मुझे तब भी लगा था और अब भी लगता है कि यह सारा प्रपीड़न, उन लोगों के लिए बड़े अपयश की बात है, जिन्होंने निरकाल से कष्ट सहने वाली इस जाति को ईसाई धर्म के नाम पर यातनाएं दी हैं।1931 में ज्यूइश क्रॉनिकल% को दिए गए साक्षात्कार में गांधीजी ने कहा था- हिन्दुस्तान में हम अपनी बड़ी-से-बड़ी सेवा करने वाले देड़, भंगी इत्यादि को, जिन्हें हम

अस्पृश्य मानते हैं, गांव के बाहर अलग रखते हैं। गुजराती में उनकी बस्ती

यहूदियों से मुझे पूरी सहानुभूति है। वे ईसाई समाज के द्वारा अस्पृश्य माने



को ढेड़वाड़ा कहते हैं। इसी प्रकार यूरोप के ईसाई समाज में यहूदी लोग अस्पृश्य माने जाते थे और उनके लिए जो ढेड़वाड़ा बसाया जाता था, उसे घेटो कहते थे। इसी तरह दक्षिण अफ्रीका में हम हिन्दुस्तानी लोग ढेड़ बन गये हैं।नवंबर 1938 में %यहूदी लोग% लेख में गांधीजी ने लिखा -

जाते रहे हैं। उनके प्रति ईसाईयों के व्यवहार और अस्पृश्यों के प्रति हिंदुओं के व्यवहार में बहुत समानता है। दोनों ही समुदायों के साथ किये जाने वाले अमानवीय व्यवहार का औचित्य सिद्ध करने के लिए धर्म की दुहाई दी गई है, लेकिन मेरी सहानुभूति इस बात की ओर से मेरी आँखें बंद नहीं कर

सकती कि न्याय के तकाजे क्या हैं। यहूदियों के लिए एक अलग देश की माँग मुझे कोई ख़ास नहीं जंचती। इस माँग का समर्थन बाइबिल के हवाले से और यहूदियों की फिलिस्तीन लौटने की सतत और तीव्र लालसा की चर्चा करके किया जाता है।संसार की अन्य अनेक जातियों की तरह यहूदी भी उसी देश को अपना देश और अपना घर क्यों नहीं बना लेते जहाँ उनका जन्म हुआ और जहां वे जीविकोपार्जन करते हैं? यहूदियों के वतन के रूप में फिलिस्तीन उन्हें पूर्णतः या अंशतः वापस मिल जाये, इसके लिए स्वाभिमानी अरबों को तबाह करना निश्चय ही मानवता के विरुद्ध अपराध होगा।गांधीजी ने यहूदियों द्वारा फिलिस्तीन में ब्रिटेन की सैन्य शक्ति के सहारे अपना राष्ट्र स्थापित करने का विरोध किया था।

वे लिखते हैं - मुझे इस बात में तनिक भी संदेह नहीं है कि जो रास्ता यहूदियों ने अपनाया है, वह गलत है। लेकिन अगर उन्हें भौगोलिक फिलिस्तीन को अपना देश मानना ही है, उसे स्वदेश के रूप मे देखना ही है, तो ब्रिटेन की संगीनों की छाया में उसमें प्रवेश करना तो उनका बिलकुल गलत तरीका है।कोई धर्मकार्य संगीनों और बमों के बल पर कैसे किया जा सकता है? वे फिलिस्तीन में अरबों की सद्भावना के सहारे ही बस सकते हैं। उन्हें अरबों का हृदय परिवर्तन करने की कोशिश करनी चाहिए। जो ईश्वर यहूदियों के हृदय का नियामक है वही अरबों के हृदय का भी है। अरबों को समझाने के हजार रास्ते हैं, बशर्ते कि यहूदी ब्रिटेन की संगीनों का सहारा लेना छोड़ दें, लेकिन अभी तो वे उन लोगों को तबाह करने में ब्रिटेन के साझीदार बने हुए हैं जिन्होंने उनका कुछ नहीं बिगाड़ा।गांधीजी का विश्वास था कि यहूदियों के लिए अहिंसा ही न्यायपूर्ण और नैतिक मार्ग हो सकता है, यदि वे अहिंसा के उस अद्वितीय अस्त्र को अपना लें, जिसके उपयोग की शिक्षा उनके श्रेष्ठतम पैगम्बरों ने दी है और जो खुशी-खुशी कोंटों का ताज पहनने वाले यहूदी ईसा कराहती मानवता को विरासत में दे गये हैं तो उनका पक्ष दुनिया का पक्ष बन जायेगा और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं कि यहूदियों ने विश्व को जो अनेक चीजें दी हैं, यह उन सबसे श्रेष्ठ और उज्ज्वल होगी।

महात्मा गांधी के इन विचारों में यहूदियों की ऐतिहासिक पीड़ा के प्रति गहरी सहानुभूति और फिलिस्तीन के अरबों के अधिकारों के प्रति अडिग न्यायबोध एक साथ दिखाई देता है। वे नाजी उत्पीड़न का विरोध करते हुए यहूदियों को अपने अधिकारों के लिए अहिंसक संघर्ष का मार्ग सुझाते हैं, लेकिन किसी अन्य पीड़ित समुदाय के अधिकारों को कुचलकर अपना राष्ट्र स्थापित करने को न्यायसंगत नहीं मानते।

संस्कार का फंडा

फलों से पाएँ चमकते दाँत



पीले हो चुके दाँतों को लोग अक्सर ब्लैच, व्हाइटनिंग क्रीम या कोई जैल लगाकर डेंटिस्ट की तगड़ी फीस भरकर सफेद बनाने की कोशिश करते हैं। लेकिन आप चाहें तो घर बैठे ही प्राकृतिक तरीके से यानी फलों का इस्तेमाल कर दाँतों की सफेदी वापस पा सकते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि कुछ रसदार फलों में नेचरल एसिड होता है जो कि ब्लैचिंग का काम करता है। यह दाँतों का पीलापन दूर कर उन्हें सफेद बनाता है।

तो अब आप घर पर ही कुछ फलों जैसे अँगूर, स्ट्रॉबेरी, मौसमी का इस्तेमाल कर अपने दाँत चमका सकते हैं। इस प्राकृतिक तरीके को इस्तेमाल करने से आपके दाँतों को कोई नुकसान भी नहीं पहुँचेगा। अगर आपकी खाहिश बिलकुल मोतियों-से चमकते सफेद दाँत पाने की है तो उन्हें हाइड्रोजन पEROक्साइड से साफ करें और पानी से धो लें। आप दाँतों को चमकाने के लिए बेकिंग सोडा और नमक का भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

दही में है खूबसूरती का खजाना

हमारे खान-पान में ऐसी कई चीजें शामिल हैं, जिनमें खूबसूरती और स्वास्थ्य का खजाना छिपा होता है। दही भी एक ऐसा ही खजाना है, जिसका उपयोग हर तरह से फायदेमंद है।

आइए जानें दही के गुण- दही के रोजाना सेवन से शरीर की बीमारियों से लड़ने की क्षमता बढ़ती है। दही में अजवाइन मिलाकर पीने से कब्ज की शिकायत दूर होती है।

गर्मी के मौसम में दही की छाछ या लस्सी पीने से पेट की गर्मी शांत होती है। इसे

पीकर बाहर निकले तो लू से भी बचाव होता है। दही पाचन क्षमता बढ़ाता है। दही में कैल्शियम प्रचुर मात्रा में होता है। इसे रोजाना खाने से पेट की कई बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं।

दही का रोजाना सेवन सर्दी और साँस की नली में होने वाले इन्फेक्शन से बचाता है। अल्सर जैसी बीमारी में दही के सेवन से विशेष लाभ मिलता है। मुँह में छाले होने पर दही के कुछ करने से छाले ठीक हो जाते हैं।

‘भूल’ जाएँ भूलने की आदत

नशीले पदार्थों से रहें दूर अक्सर लोग तनावमुक्त होने के लिए एल्कोहॉलिक पदार्थों का सेवन करने लगते हैं। इन पदार्थों का सीधा असर दिमाग पर पड़ता है जिससे मनुष्य की याददाश्त क्षमता कमजोर हो जाती है। इस विषय में जानकारी

वीजों को

रखकर भूल जाना, किसी जरूरी बात का दिमाग से निकल

जाना, बातचीत करते समय विषय का ध्यान से

हट जाना, नामों का याद न रहना, दिनचर्या में

उपयोग में होने वाली छोटी-छोटी बातें भी याद न

रहना। यह कुछ ऐसी समस्याएँ हैं जो तेजी से लोगों में

बढ़ती जा रही हैं। यँ कह लीजिए कि लोग भूलने की समस्या

के शिकार होते जा रहे हैं। जिसका मुख्य कारण है तनाव, तो

वहीं आधुनिक भौतिक सुख-सुविधाओं पर बढ़ती लोगों की

निर्भरता भी इसकी एक वजह है। जो मानव की

मानसिक क्षमता को घुन की तरह धीरे-धीरे

नष्ट करती जा रही है।

देते हुए न्यूरोसर्जन डॉ. हर्ष सक्सेना ने बताया कि भूलने की बीमारी उन लोगों में ज्यादातर देखने को मिलती है जो शराब का सेवन करते हैं। नशीले पदार्थों का सेवन करने वाले व्यक्ति पूरी तरह से फोकस होकर बात को नहीं सुन पाते हैं जिससे यह दिमाग में सही ढंग से रजिस्टर नहीं होती है।

लोगों की लाइफ स्टाइल में दिनोंदिन आ रहा परिवर्तन जहाँ दुनिया को तरकी के नए सोपानों की ओर अग्रसर कर रहा है, वहीं मनुष्य को नई-नई तरह की बीमारियों से भी ग्रसित करता जा रहा है। ऐसी एक बीमारी है बीमेट्रिया, जिसे सामान्य भाषा में लोग

भूलने की आदत कहते हैं। पहले यह समस्या जहाँ बुजुर्ग वर्ग के लोगों में ज्यादा देखने को मिलती थी, वहीं युवाओं और प्रौढ़ वर्ग के लोग भी तेजी से इस बीमारी के शिकार हो रहे हैं। खासतौर पर महिलाओं में यह समस्या तेजी से बढ़ रही है।

कमजोर होती मस्तिष्क क्षमता लोगों में तेजी से बढ़ रही भूलने की समस्या के विषय में जानकारी देते हुए न्यूरो सर्जन डॉ. विजय परिहार ने बताया कि इस बीमारी में मनुष्य के दिमाग की तंत्रिकाएँ स्थिर हो जाती हैं। मेमोरी को संजोकर रखने वाला लैम्बिक सिस्टम भी कमजोर हो जाता है। जिसके कारण कोई बात या जगह

आज के ‘ब्यूटीफुल’

मर्द



याद रखने में मुश्किल होती है। यह समस्या दो तरह की होती है। पहले प्रकार की भूलने की बीमारी को रिसेंट बीमेट्रिक कहते हैं। इसमें व्यक्ति तुरंत किए हुए कार्यों व बातों को याद नहीं रख पाता है। भूलने की समस्या का यही प्रकार वर्तमान में अधिकांश लोगों में देखने को मिल रहा है। वहीं दूसरे प्रकार की भूलने की बीमारी में व्यक्ति अपनी पुरानी यादों को पूरी तरह से भूल जाता है।

तनाव है मुख्य कारण आपाधापी से भरी जिंदगी में तनाव एक ऐसी समस्या है जो हर बीमारी की मूल जड़ है। लोगों में बढ़ रही भूलने की समस्या की भी मुख्य वजह तनाव ही है। इसके बारे में जानकारी देते हुए डॉ. परिहार ने बताया कि यदि किसी व्यक्ति के मस्तिष्क में स्ट्रेस लगातार बना रहता है या दिन-ब-दिन बढ़ता जाता है तो इससे ब्रेन के प्रोग्रेस में दिक्कत आती है। तो वहीं व्यक्ति की मस्तिष्क क्षमता कमजोर होने लगती है जिससे मरीज की सोचने की, याद रखने की खासकर शॉर्ट टर्म मेमोरी और सामान्य व्यवहार की

क्षमता प्रभावित होती है। इसके कारण मरीज का मिजाज भी बदल जाता है। छोटी-छोटी बात में चिड़चिड़ाते लगता है, उसके मन में हमेशा बेचैनी बनी रहती है, छोटी-छोटी बात को लेकर भी चिंता करने लगता है जिसके कारण व्यक्ति के मस्तिष्क में स्ट्रेस हमेशा बना

रहता है। महिलाएँ हो रहीं शिकार भूलने की इस बीमारी की सबसे ज्यादा शिकार महिलाएँ हो रही हैं। महिलाओं में इस समस्या का बढ़ने का मुख्य कारण है कि उन्हें एक ही समय में कई कामों पर फोकस करना होता है। नौकरी, घर, बच्चे, रिश्तेदार, शॉपिंग जैसी कई बातें एक साथ एक ही समय में उनके दिमाग में चलती रहती हैं जिसमें जरा डिसबैलेंस होने पर तनाव से घिर जाती हैं जिसके कारण वह अन्य बातों भी भूल जाती हैं।

अपनाएँ यह उपाय सुबह-सुबह सैर पर जाने से दिमाग की कोशिकाओं में शुद्ध वायु का प्रवाह होता है जो मस्तिष्क में रक्त संचार को बढ़ाता है, तो मस्तिष्क को तनाव मुक्त करता है और याददाश्त की क्षमता को बढ़ाता है। दिमाग को चुस्त-दुरुस्त रखने का सबसे आसान उपाय है दिमागी कसरत, जो कई तरह दिमागी खेलों जैसे पजल, सुखेकू, क्रॉस वर्ड आदि के माध्यम से की जा सकती है। यह खेल मेमोरी पवार को बढ़ाते हैं जिससे जगह, नाम आदि आसानी से याद रखे जा सकते हैं।



कच्चे आम की गुठली का चूर्ण दही या पानी के साथ सुबह-शाम लेने से कृमि रोग में फायदा होता है।

हैजा रोग होने पर जब शरीर में ऐंठन होने लगती है या सर्दी के कारण शरीर में ऐंठन होती है तो ऐसे में अखरोट के तेल की मालिश करने से रोग में आराम मिलता है।

अमरुद के कोमल पत्तों को पीसकर गठिया रोग से सूजे हुए स्थान पर लेप करने से रोग में आराम मिलता है।

मसूड़ों से पानी आता हो तो गुलाब तथा अनार के सूखे हुए फूल पीसकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण से मंजन करने से मसूड़ों से पानी आना रुक जाता है।

अजीर्ण या कफ की समस्या को वजह से अगर मुँह से बदन आती हो तो रोज दस ग्राम मुनक्का जरूर

युवावस्था में पित्त की प्रतिक्रिया मुखों से रूप में सामने आती है। यह हारमोनल असंतुलन से भी हो सकता है या किसी दवा के साइड इफेक्ट से भी। वजह जो भी हो, पित्त को संतुलित करना बहुत आवश्यक है।

बहुत सी जड़ी-बूटियाँ व सब्जियाँ हैं जो जिसको डीटॉक्सीफाई करती हैं। जैसे करेले का जूस, नींबू, चींगवार का जूस, बेल का शरबत सेवना शकरी के इनका सेवन करें। मगर योग्य चिकित्सक की देखरेख में यह करें।

बहुत से अनाज भी मुँहसे भगाने का काम करते हैं जैसे बाउन राइस, जौ आदि।

वजन कम करने के लिए भी जौ अच्छा अनाज है। साथ ही इन

सूखी हल्दी की गाँठ को नींबू के रस में मिलाकर लगाने से भी दाग-धब्बे तेजी से मिटने लगते हैं। सूखी त्वचा के दाग-धब्बे मिटाने के लिए दूध में चंदन की लकड़ी घिसकर लगाएँ।

तैलीय त्वचा के दाग-धब्बे मिटाने के लिए चंदन का बूरा गुलाब जल में मिलाकर लगाएँ। यह प्रयोग विशेष रूप से गर्मियों के लिए लाभकारी है।

चोट के निशान पर लाल चंदन रोज पानी में घिस कर लगाएँ 20 दिन में फायदा नजर आने लगेगा। टमाटर में नींबू की दस-बारह बूँदें मिलाएँ इस मिश्रण को चेहरे पर मलने से दाग-धब्बे दूर होते हैं। अक्सर पेट की खराबी से चेहरे पर दाग-धब्बे नजर आते हैं अतः दिन में कम से कम तीन बार नींबू पानी पिएँ, कुछ ही हफ्तों में चेहरा चमकने लगेगा। जौ का रस इन दिनों होने वाले

आज के युवक भी अपने पहनावे को लेकर सजग हो रहे हैं। लड़कियों की तरह क्रीम लगाना, घंटों सैलून में बैठना, फैशियल करवाना, वैक्सिंग करवाना स्या में जाना उनकी जीवनशैली का हिस्सा हो चुका है। अब पुरुष भी महिलाओं की तरह सौंदर्यवर्धक सर्जरी करवाने लगे हैं। दरअसल पुरुष अपनी पुरानी छवि से ऊब चुके हैं। उन्हें अब कुछ नया और बेहतर चाहिए।

आज के युवक भी अपने पहनावे को लेकर सजग हो रहे हैं। लड़कियों की तरह क्रीम लगाना, घंटों सैलून में बैठना, फैशियल करवाना, वैक्सिंग करवाना स्या में जाना उनकी जीवनशैली का हिस्सा हो चुका है। अब पुरुष भी महिलाओं की तरह सौंदर्यवर्धक सर्जरी करवाने लगे हैं। दरअसल पुरुष अपनी पुरानी छवि से ऊब चुके हैं। उन्हें अब कुछ नया और बेहतर चाहिए।

सर्जिकल बदलावों में अंधेड़ उम्र के पुरुष ज्यादा रुचि ले रहे हैं। नेशनल स्किन सेंटर के डॉक्टर नवीन तनेजा कहते हैं 2 साल पहले तक महिलाएँ ही चेहरे की झुर्रियाँ हटवाने, लिप ऑगमेंटेशन के जरिए होंठों को नया आकार देने, हाइड्रेशन, चेहरे के बालों को हटाने और सर्जरी करवाने की प्राथमिकता देती थीं लेकिन आज मेरे पास कई पुरुष भी आते हैं जो अच्छा-खासा पैसा कॉस्मेटिक पर खर्च करते हैं।

साफ, चिकनी कोमल त्वचा मर्दानगी दिखाने के लिए रूपापन अब पुरुषों के लिए जरूरी नहीं है। मेट्रोसेक्सुअल पुरुष कोमलता पसंद करते हैं। डॉ. तनेजा कहते हैं, पुरुषों ने काफी समय पहले से ही थ्रेडिंग करवाना शुरू कर दिया था मगर अब ऐसे पुरुषों की संख्या बढ़ती जा रही है जो थ्रेडिंग के साथ-साथ लेजर हेयर रिमूवल अपनाते हैं ताकि उनकी सरख दाढ़ी में कुछ नरमी आ सके। नियमित लेजर ट्रीटमेंट त्वचा को रूखा होने से रोकता है।

अब युवा लड़के सख्त से नर्म की ओर अग्रसर हो रहे हैं। कॉस्मेटिक सर्जन डॉ. अजय कश्यप कहते हैं, इसमें कोई दो राय नहीं कि बढ़ती उम्र के साथ चेहरे पर झुर्रियाँ आने लगती हैं। यही कारण है कि अंधेड़ उम्र के पुरुष चीक ऑगमेंटेशन यानी गालों को नया आकार देने को महत्व दे रहे हैं। इसके कई तरीके हैं, कृत्रिम इन्प्लांट के साथ सिलिकॉन, पोरक्स इन्प्लांट और इंजेक्टेबल फिलर्स। ज्यादातर पुरुष सिलिकॉन इन्प्लांट को तर्जिह दे रहे हैं।

पतले व नर्म होंठ लड़के भी अब नर्म होंठ पाना चाहते हैं। पुरुषों के मोटे और भरे होंठ भी अब चलन से बाहर हो गए हैं। प्रशांत मेहरा के होंठ काफी मोटे और बाहर की ओर थे। प्रशांत ने इससे निजात पाने के लिए कॉस्मेटिक सर्जरी करवाने में ही अपनी भलाई समझी। इस प्रक्रिया के तहत होंठों की लंबाई का विशेष ध्यान रखा जाता है। अतिरिक्त लिप टिश्यू निकाला जाता है, जिससे होंठ पतले हो जाते हैं।

इसके अलावा अब पुरुष अपने हाथ-पैर की भी केयर करने लगे हैं। वे वैक्सिंग भी करवा रहे हैं और हेयर एंड बांडी स्या भी लेने लगे हैं। ये सब करवाने में अब पहले जैसी झिझक नहीं रही कि लोग क्या कहेंगे? क्यों न हो, आखिर अच्छा दिखने का अधिकार पुरुषों को भी उतना ही है जितना कि महिलाओं को। सो अब हैडसम नहीं इन्हें ब्यूटीफुल मर्द कहिए।

आसान उपाय हर मर्ज से बचाए

- इलायची का छिलका दाँतों के रोग,सिरदर्द और मुँह की सूजन में लाभ पहुंचाता है।
- ईसबगोल और मिश्री बराबर-बराबर मात्रा में मिला लें। दूध से इस मिश्रण को एक-एक चम्मच लेने से स्वप्नदोष रोग नहीं सताता है। मिश्रण को दूध से सोने से एक घंटा पूर्व ले लेना चाहिए।
- बड़ की छाल और बबूल के पत्ते और छाल बराबर मात्रा में लेकर एक पानी में भिगो दें। इस पानी से कुल्ला करने पर गले का रोग ठीक होता है।
- बड़ की जटा का चूर्ण दूध की लस्सी के साथ पीने से नकसीर रोग ठीक होता है। बहेड़े और शकर बराबर मात्रा में मिलाकर सेवन करने से आँखों की रोशनी में बढ़ोतरी होती है।
- चूने में दूध बराबर मात्रा में पानी में पीस लें। इस मिश्रण का लेप मस्तक पर करने से मस्तक की पीड़ा दूर होती है।



पिंपल्स की दुश्मन सब्जियाँ



दोनों अनाजों में आयरन, बी-कॉम्प्लेक्स व अन्य खनिज भी भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं।

फलों में तरबूज, खरबूजा, सेब, मौसमी आदि सभी पित्त प्रकृति के लिए अच्छे हैं। मुँहासों को शरीर से दूर रखने के लिए आमतौर पर आप सभी फल ले सकते हैं लेकिन बेहतर होगा कि आम से बचें।

सभी सब्जियाँ ठंडी प्रकृति की होती हैं। इसलिए शरीर को ठंडा करने के लिए सभी सब्जियाँ खाई जा सकती हैं। इनसे मुँहासे भी साफ होते हैं। जहाँ तक सब्जियों के जूस का तात्पर्य है, तो लौकी का जूस, पेठा जूस और बंदगोभी का जूस पित्त प्रकृति के लिए बहुत अच्छे हैं।

घरेलू उपाय, चेहरा चमकाए

फोड़े-मुँहासे, घमोरियों को रोकता है, रक्त का शुद्धिकरण करता है व पाचनक्रिया को भी व्यवस्थित रखता है। आधा बड़ा चम्मच जौ रात को सोते समय पानी में भिगो दें। इससे आधी मात्रा के करीब मिश्री को अलग से भिगोएँ। सुबह पानी से निकालकर इसे सिल पर बारीक पीस लें। थोड़ी-सी पुदीना की पत्तियाँ धोकर इसी के साथ पीस लें। इस मिश्रण को एक छनने वाले कपड़े पर रखकर पानी की सहायता से छान लें। धुली हुई मिश्री मिलाएँ। इस पेय को दिन में एक बार जरूर पिएँ।





नोरा फतेही

ने किस शर्त पर बिग बॉस के लिए हां कहा था, एक्ट्रेस ने सालों बाद किया खुलासा

बॉलीवुड एक्ट्रेस नोरा फतेही ने कम समय में बड़ा नाम कमा लिया है और अब वे दुनियाभर में जानी जाती हैं. लेकिन आउटसाइडर होने के नाते नोरा फतेही को भी करियर की शुरुआत में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा था. उन्होंने कुछ वर्क एसाइनमेंट्स लिए थे जिनके लिए उन्हें कभी भी कोई पैसे नहीं दिए गए. इसकी वजह से एक्ट्रेस जरा फ्रस्टेट रहती थीं और इंडस्ट्री में इनसिक्वोर भी फील करने लगी थीं. उन्होंने कुछ गाने किए थे जिनके पैसे उन्हें नहीं दिए गए थे. ऐसे में जब उन्हें बिग बॉस का ऑफर आया तो उन्होंने मना कर दिया था.

एक्ट्रेस ने सीधे तौर पर कहा था कि इंडस्ट्री में उनके काम की वैल्यू नहीं समझी जा रही है और वे फिलहाल कोई भी प्रोजेक्ट बिना किसी गारंटी के साइन नहीं करना चाहती थीं. लेकिन उन्होंने जब गंभीरता से सोचा तो एक डील पर अपनी हामी भरी और इसके बाद उनके लिए सफलता के रास्ते भी खुल गए.

नोरा फतेही ने क्या कहा ?

नोरा फतेही ने कहा- मैंने कई गाने किए लेकिन मुझे इसकी पेमेंट नहीं मिल रही थी. प्रोड्यूसर्स ने एजेंसी को पे कर भी दिया होगा तो मेरे पास तक पैसा नहीं पहुंचा.



मुझे पेमेंट के लिए इंतजार करना पड़ता था. मैं इसके लिए पागलों की तरह लड़ रही थी. इस दौरान ही मेरे पास एक कॉल आती है और मुझसे पूछा गया कि क्या मैं बिग बॉस करूंगी. मैंने उनसे कहा कि नहीं मैं कुछ नहीं करना चाहती हूं आप लोग मेरे विजन को नहीं समझ रहे हैं और ब्ला ब्लाफ फिर जब उन्होंने मुझे बताया कि इसके लिए मुझे इतने रुपये मिलेंगे तब जाकर मैं रुकी और मैंने ओके कहा.

नोरा ने शो के बदले शो की रखी शर्त

नोरा फतेही ने इस दौरान शो के बदले शो की शर्त रखी. उन्होंने कहा- ये कोई बुरी चीज नहीं है. ये एक प्लेटफॉर्म है. और अगर आप स्मार्ट हैं तो ये प्लेटफॉर्म आपको घर-घर में फेमस कर देगा. ऊपर से शो में मेरी वाइल्ड कार्ड एंट्री थी और मैं उसमें बहुत ज्यादा दिनों तक टिकने वाली नहीं थी. तो मैंने सोचा कि क्यों ना इसे किसी और शो से एक्सचेंज कर लिया जाए. मैं दिल से झलक दिखला जा करना चाहती थी और वो चैनल भी एक ही था. तो मैंने उनसे कहा कि आप मुझे झलक दे दीजिए और मैं इसके बदले में बिग बॉस कर लूंगी. और मुझे बदले में झलक शो मिल गया. नोरा अब टीवी ही नहीं बल्कि बॉलीवुड की भी बड़ी एक्ट्रेस बन गई हैं.

मुश्किल से 1 करोड़ कमा पाई करीना कपूर की दायरा, कुणाल खेमू की वाइब रही आगे, कितना हुआ कलेक्शन?



सिनेमाघरों में नई फिल्मों का आगमन हुआ है. लेकिन पहले से ही कुछ फिल्में बॉक्स ऑफिस पर अच्छा कलेक्शन कर के दिखा रही हैं. इन फिल्मों में हनुमान अंश और मिर्जापुर द मूवी का नाम शामिल है. दोनों ही फिल्मों को ऑडियंस का पूरा सपोर्ट मिल रहा है. यही वजह है कि सिनेमाघरों में करीना कपूर की दायरा और कुणाल खेमू की वाइब फिल्म को लेकर ऑडियंस की कोई खास दिलचस्पी नजर नहीं आई है. करीना फिल्म इंडस्ट्री का नामी चेहरा हैं. ऊपर से फिल्म में साउथ के बड़े स्टार पृथ्वीराज सुकुमारन भी हैं. लेकिन इन दोनों कलाकारों की उपस्थिति और ट्रेलर को मिला जोरदार रिस्रॉन्स भी इस फिल्म की नैया पार लगाता नजर नहीं आ रहा है.

वहीं कुणाल खेमू की वाइब से उतने ज्यादा कलेक्शन की उम्मीद नहीं थी लेकिन इसके बाद भी इस फिल्म ने कमाई के मामले में करीना की दायरा फिल्म को पीछे छोड़ दिया है. यही बात इस फिल्म के कलेक्शन को यूनिक बनाती है. आइये जानते हैं कि बॉक्स ऑफिस पर आई इन दोनों फिल्मों का हाल कैसा है.

करीना की दायरा ने कितने कमाए ?

बॉलीवुड एक्ट्रेस करीना कपूर की फिल्म दायरा ने सिनेमाघरों में पहले दिन सैकनिल्क की रिपोर्ट्स के मुताबिक नेट कलेक्शन के मामले में 90 लाख रुपये कमाए हैं. वहीं इस फिल्म का ग्रांस कलेक्शन 1.08 करोड़ रुपये का रहा है. फिल्म को कुल 2283 स्क्रीन्स पर रिलीज किया गया था. वहीं बात करें वाइब फिल्म की तो इसने रिलीज के पहले दिन नेट कलेक्शन के मामले में 1.50 करोड़ का कलेक्शन कर लिया है. वहीं दूसरी तरफ फिल्म का ग्रांस कलेक्शन 1.80 करोड़ रुपये का रहा है. इस फिल्म ने करीना की दायरा को पीछे छोड़ दिया है. हालांकि कलेक्शन तो दोनों ही फिल्मों का कम ही माना जाएगा. अब पहले वीकेंड पर भी कोई चमत्कार ही दोनों फिल्मों की कमाई में खास इजाफा ला सकता है.

दायरा फिल्म की बात करें तो ये एक मिस्ट्री-क्राइम-थ्रिलर फिल्म थी जिसमें करीना कपूर लीड महिला पुलिस अफसर के रोल में नजर आई हैं. वहीं दूसरी तरफ फिल्म में उनके अपोजिट पृथ्वीराज सुकुमारन भी नजर आए. ट्रेलर के पसंद किए जाने के बाद भी फिल्म की पहले दिन की कमाई काफी निराशाजनक रही. वहीं दूसरी तरफ बात करें अगर वाइब फिल्म की तो इसमें कुणाल खेमू लीड रोल में हैं. वहीं फिल्म में प्रीति जिंटा और यशपाल शर्मा भी अहम रोल में हैं. रिपोर्ट्स के मुताबिक इस फिल्म का बजट 35 करोड़ का है. ऐसे में फिल्म के लिए ये स्टार्ट चिंताजनक कही जा सकती है. उससे भी बड़ी बात तो ये है कि हनुमान अंश और मिर्जापुर फिल्म का जैसा कलेक्शन देखने को मिल रहा है उस हिसाब से दायरा और वाइब की आगे की राह भी कम चुनौतीपूर्ण नहीं होगी.

क्या भाभी कैटरीना कैफ की बहन इसाबेल को डेट कर रहे हैं सनी कौशल? शरवरी से हो चुका है ब्रेकअप



जेनिफर विंगेट की शादी एक बार फिर सुर्खियों में है. एक्ट्रेस ने कुछ महीने पहले यूके में विलियम इश्माएल के साथ शादी की थी. जेनिफर ने अपनी इंटीमेट चर्च वेडिंग की तस्वीरें भी सोशल मीडिया पर शेयर की थीं. अब उनकी शादी से जुड़ी कुछ नई तस्वीरें और वीडियो सामने आए हैं, जो गोवा में हुए एक अलग सेलिब्रेशन के हैं. इन तस्वीरों में फैंस को शादी के जश्न का एक और खूबसूरत अंदाज देखने को मिल रहा है.

यूके में हुई शादी के दौरान जेनिफर और विलियम ने चर्च में क्रिश्चियन रीति-रिवाज से शादी की थी. वहीं, गोवा में हुए सेलिब्रेशन में दोनों ट्रेडिशनल इंडियन आउटफिट में नजर आए. इस खास मौके पर टीवें सामने आई थीं. हालांकि, करण ने उस वक्त इन खबरों को खारिज कर दिया था. जेनिफर और करण वाही वेब सीरीज 'राइजिंगहानी वर्सेज राइजिंगहानी' में साथ काम कर चुके हैं और दोनों की अच्छी दोस्ती है. ऐसे में जेनिफर के गोवा सेलिब्रेशन में करण की मौजूदगी उनकी दोस्ती को दिखाती है.

जेनिफर विंगेट की दूसरी शादी

विलियम इश्माएल के साथ जेनिफर की ये दूसरी शादी है. इससे पहले उन्होंने एक्टर करण सिंह ग्रोवर से 2012 में शादी की थी. दोनों की शादी ज्यादा समय तक नहीं चली और 2014 में दोनों अलग हो गए थे. इसके बाद करण सिंह ग्रोवर ने एक्ट्रेस बिपाशा बसु से शादी की. दोनों की एक बेटी भी है.

कैसे शुरू हुआ था शरवरी-सनी का रिश्ता ?

दरअसल सनी कौशल और शरवरी वाघ का रिश्ता साल 2020 में वेब सीरीज 'द फॉरगॉटन आर्मी' की शूटिंग के दौरान शुरू हुआ था.

उसी सीरीज के सेट पर दोनों की मुलाकात हुई थी. मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, दोनों की साथ काम करते हुए गहरी दोस्ती हुई, जो प्यार में बदल गई. पर साल 2025 में ब्रेकअप होने की खबर सामने आ गई. हाल ही में एक रिपोर्ट में दावा किया गया था कि शरवरी के तेजी से बढ़ते करियर की वजह से सनी कौशल काफी इनसिक्वोर हो गए थे. जिसके चलते रिश्ते में दूरियां आ गईं.

दीपिका पादुकोण

रणवीर के घर गूंजी किलकारी, एक्ट्रेस ने बेटी को दिया जन्म

बॉलीवुड एक्ट्रेस दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह दूसरी बार पेरेंट्स बन गए हैं. कपल के घर फिर से लक्ष्मी का जन्म हुआ है. जी हां, दीपिका ने बेबी गर्ल को जन्म दिया है. इस बात की जानकारी खुद कपल ने सोशल मीडिया के जरिए

जन्म दिया है.दीपिका और रणवीर की इस पोस्ट पर फैंस से लेकर सेलेब्स भी उन्हें बधाई दे रहे हैं. कपल का पूरा कमेंट सेक्शन बधाईयो से भर गया है. बता दें कि, रणवीर और दीपिका की पहले से एक बेटी है, जिसका नाम दुआ है. अभी हाल ही में दुआ 2 साल की हुई है. वहीं, अब दीपिका ने 2 साल अब कपल के घर में एक और नहीं परी आ गई है.

सेलेब्स दे रहे कपल को बधाई

दीपिका और रणवीर की दूसरी बेटी होने पर सेलेब्स कपल को बधाई दे रहे हैं. भोजपुरी एक्ट्रेस मोनालिसा ने लिखा- आप दोनों को बहुत-बहुत बधाई. इसके अलावा अंगद बेदी ने लिखा- बाबा सुख रखे, एक और देवी. मल्लिका दुआ ने कमेंट किया- 'दो बेटियां होना बहुत सौभाग्य की बात है.' मसाबा गुप्ता ने लिखा- दो-दो बेटियां, इससे ज्यादा और क्या ही चाहिए.

दूसरी बार पेरेंट्स बने रणवीर-दीपिका

बता दें कि, दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह साल 2018 में इटली के लेक कोमो स्थित खूबसूरत विला डेल बालबिएनेलो में हुई थी. शादी के 5 साल बाद साल 2024 में एक्ट्रेस ने पहली बेटी दुआ का जन्म दिया था. वहीं, 2025 में कपल ने दूसरी प्रेगनेंसी का ऐलान किया था. अब 19 सितंबर 2026 को दीपिका और रणवीर के घर फिर से एक नन्हीं परी आ गई है.



फैंस के साथ शेयर की है. दीपिका-रणवीर ने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट किया, जिसमें बेबी का फुट बना हुआ है. इसमें लिखा है 'वेलकम बेबी गर्ल'. फोटो में बर्थ डेट भी लिखी है. जिसके मुताबिक, दीपिका ने 19 सितंबर को बेटी को

